नवमोऽध्यायः

आगमप्रशंसा

आगम की प्रशंसा

ब्रह्मोवाच

एवं स्त्रीषु मनुष्याणां वृत्तिरुक्ता समासतः। साम्प्रतं च मनुष्येषु स्त्रीणां समुपदिश्यते॥ १॥
सम्यगाराधनात्पुंसां रतिर्वृत्तिश्च योषितः। पुत्राः स्वर्गाद्यदृष्टं च तस्मादिष्टो हि तद्विधिः॥ २॥
कर्त्तव्यं नाम यत्किञ्चित्सर्वं विधिमपेक्षते। व्यक्तिमायाति वैफल्यं तदेवारब्धमन्यथा॥ ३॥
विध्यपेक्षीणि सर्वाणि कार्याण्यविफलान्यपि। हेतुभूतास्त्रिवर्गस्य महारम्भा विशेषतः॥ ४॥

ब्रह्मदेव कहते हैं– मैंने स्त्री के प्रति पुरुष द्वारा करणीय व्यवहार का वर्णन कर दिया। अब स्त्री द्वारा पुरुष के प्रति करणीय व्यवहार का श्रवण करें। पति की सम्यक् आराधना से ही स्त्रीगण को रति, जीविका, पुत्र, स्वर्ग तथा अन्य दुर्लभ वस्तुएँ एवं पदार्थ प्राप्त होते हैं। अत: उनके लिये विधिवत् पति की आराधना करना ही कर्तव्य है। प्रत्येक सांसारिक कर्तव्य में विधि-विधान अपेक्षित रहता है। विधि-विरुद्ध कार्य से विफलता ही स्पष्टतया मिलती है। विधिविहित कार्य ही सफल होते हैं। विशेष सावधानी से उनको सम्पन्न करने पर वे ही इहलोक में धर्म, अर्थ, कामप्रद हो जाते हैं॥१-४॥

सर्वसाध्याविधिज्ञानमागमैकनिबन्धनम्। साध्यं दृष्टमदृष्टं च द्वयं विधिनिषेधयोः॥ ५॥
शास्त्राधिकारो न स्त्रीणां न ग्रन्थानां च धारणे। तस्मादिहान्ये मन्यन्ते तच्छासनमनर्थकम्॥ ६॥
आगमैकक्रियायोगे स्त्रीणामध्यधिकारिता। मृते भर्तरि साध्वी स्यादित्यादौ स्मृतिभाषितम्॥ ७॥
तस्मात्कार्यमकार्यं वा विज्ञाय प्रभुरागमात्। गुणदोषेषु ताः सम्यक्छास्ति राजा प्रजा इव॥ ८॥

इन कार्यों का तथा तत् सम्बन्धित विधि, निषेध का ज्ञान शास्त्र से ही हो सकता है। विधि तथा निषेध के दृष्ट एवं अदृष्ट दोनों ही साध्य हैं। स्त्रीगण को वेदाधिकार नहीं है। उनको ग्रन्थ अध्ययन का अधिकार भी नहीं है। अत: उनके सम्बन्ध में उपदेश देना व्यर्थ कहा गया। केवल उनको यह अधिकार है कि वे शास्त्रीय कार्यों में पति के साथ रहें। पति का निधन हो जाने पर स्त्री का सदाचारी होना यह सब विषय स्मृतियों में वर्णित है। पति वेदों से कार्य तथा अकार्य का ज्ञान पाकर स्त्रीगण के गुण-दोष के सम्बन्ध में वही व्यवहार करे, जैसा राजा प्रजा के साथ करता है॥५-८॥

सत्येव प्रमदाः काश्चिद्विशेषाधिगतागमाः। यत्तु शास्त्राधिकारित्वं वचनं स्यान्निरर्थकम्॥ ९॥
केचिद्वेदविदो विप्राः कृत्यैर्वेषक्रियापराः। तथापि जातिमात्रेण त एवात्राधिकारिणः॥ १०॥
क्रियन्ते वेदशास्त्रज्ञैः प्रयोगाः शास्त्रलौकिकाः। स्थितमेषामदूरेऽपि शास्त्रमेव निबन्धनम्॥ ११॥
व्याधधीवरगोपालप्रभृतीनां च दृश्यते। विष्टयं गारकसौर्यादिदिनानां परिवर्जनम्॥ १२॥
गम्यागम्यादिकार्येयं नियताचारसंस्थितिः। लोकानां शास्त्रवाक्यानां प्राणाः स्वेष्टनिबन्धनाः॥ १३॥
तस्माच्चतुर्णां वर्णानामाश्रमाणां च सर्वशः। मुख्यगौणादिभेदानां ज्ञेया शास्त्राधिकारिता॥ १४॥

पौर्वापर्यं तु विज्ञातुमशक्यं लोकशास्त्रयोः। तच्छास्त्रमेव मन्तव्यं यथा कर्मशरीरवत्॥ १५॥

यह सत्य है कि विशेष रूप से वेदज्ञान प्राप्त कुछ स्त्रियाँ हैं। इनके सम्बन्ध में शास्त्रीय अधिकारों का कथन व्यर्थ होता है। कुछ ऐसे ब्राह्मण भी हैं जो वैदिक क्रियाओं को करने वालों की तरह वेशधारी हैं, वैसा आचरण भी करते हैं, तथापि केवल ब्राह्मण जाति के कारण ही वेदाधिकारी हैं। वेद तथा शास्त्रज्ञाता शास्त्रीय एवं लौकिक, उभय आचारों का पालन करते हैं। तब भी शास्त्र ही प्रमाण हैं। व्याध, धीवर, गोपालक आदि जाति वाले भी भद्रा, मंगल, रविवार का त्याग करते हैं। उनमें भी उचित-अनुचित कार्य आदि हेतु आचार-व्यवहार की स्थिति निश्चित रहती है, वे इसे किसी से नहीं पूछते। वे शास्त्रवाक्य तथा लोकव्यवहार के प्राण पर निर्भर रहते हैं। अतः चारों वर्ण तथा चारों आश्रम में जो रहते हैं, उनका शास्त्रों पर जो मुख्य एवं अमुख्य अधिकार है, वह जानना चाहिये। यह ज्ञात करना दुष्कर है कि कौन पहले का है तथा कौन बाद का है? जैसे कर्म पहले हैं अथवा शरीर यह जान सकना कठिन है॥९-१५॥

आगमे च पुराणे च द्विधैव नास्तिकग्रहम्। मार्गं महद्भिराचीर्णं प्रपद्येताविकल्पधीः॥ १६॥
मूलं गृहस्थधर्माणां यस्मान्नार्यः पतिव्रताः। तस्मादासां प्रवक्ष्यामि भर्तुराराधने विधिम् ॥ १७॥

॥ इति श्रीभविष्यमहापुराणे शतार्धसाहस्त्र्यां संहितायां ब्राह्मे पर्वणि
आगमप्रशंसा नाम नवमोऽध्यायः॥९॥

तभी नियम है कि शास्त्र ही सबका आधार है। वेद तथा पुराण के प्रति नास्तिकता का ज्ञान दो प्रकार से ही होता है। तभी सत्पुरुषगण जिस मार्ग को स्वीकार करते हैं उसे संदेहरहित होकर ग्रहण करने पर पतिव्रता स्त्रियाँ ही धर्म कार्यों की मूल हैं। ये पति की आराधना किस प्रकार करे उस संदर्भ में कह रहा हूँ॥१६-१७॥

।। श्रीभविष्यमहापुराण में शतार्ध साहस्त्री नामक संहिता के ब्राह्मपर्व में
आगम की प्रशंसा नामक नवाँ अध्याय पूर्ण हुआ।।९।।

★★★